अज्ञेय की कहानियाँ

(भारत विभाजन की त्रासदी के सन्दर्भ में)

डॉ. इशरत बी खान

अज्ञेय प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने कविता, निबन्ध, यात्रा, डायरी, पत्र, रिपोर्ताज, सूक्ति और कथा साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में साहित्य लेखन किया है और प्रत्येक विधा में उन्हें सफलता मिली है। हिन्दी कहानी में भी उनका योगदान कम नहीं है। वे प्रेमचन्द के बाद उभरने वाले उन लेखकों में से हैं जिन्होंने हिन्दी कहानी में नए आयाम उद्घाटित किये हैं। इस संदर्भ में नामवर जी का कहना है 'अज्ञेय ने निश्चय ही युद्ध के मोर्चे से लौटकर साहित्यिक सक्रियता का परिचय दिया। 'प्रतीक' के सम्पादन के साथ उन्होंने कविता और उपन्यास की तरह कहानी रचना की दिशा में भी उत्साह से कदम आगे बढ़ाया।'[1]

अज्ञेय की कहानियों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

पहली क्रान्तिकारी जीवन से संबंधित, दूसरी प्रेम संबंधी, तीसरी मनोविज्ञान से संबंधित और चौथी भारत-विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी हुई कहानियाँ।

स्वाधीनता के साथ विभाजन से उपजी त्रासद स्थितियाँ, हत्या, लूटपाट, आतंक और घरों से बेघर होने के माहौल में कथाकारों को अत्यन्त उद्वेलित किया। इस समय मंटो की टोबा टेक सिंह, भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' कहानी 'अमृतसर आ गया', मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का मालिक', अज्ञेय की 'शरणदाता' और कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया' आदि स्मरणीय कहानियाँ आईं जो समय के सच को रेखांकित करती गहरी मानवीय संवेदना के कारण कालजयी बन गईं। विस्थापन के दर्द और त्रासदी ने समाज के विभिन्न समूहों और सम्प्रदायों के आपसी संबंधों को झकझोर कर रख दिया। स्वतंत्रता आंदोलन ने लोगों में जाति-पांति विरोध की चेतना तथा राष्ट्रीय एकता उत्पन्न की थी एवं प्रजातंत्र के मूल्यों की जानकारी दी थी, वह सब मटियामेट हो गए। प्रेम, करुणा, दया और उत्सर्ग जैसे मूल्य साम्प्रदायिक दंगे में इतने विकृत हो गए कि उन्हें पहचानना कठिन हो गया।

इसी पृष्ठभूमि में अज्ञेय ने भी अनेक कहानियाँ लिखी हैं जिसमें शरणार्थी जीवन की समस्याएं मुख्यतः उभरकर आती हैं। लेटर बॉक्स, शरणदाता, रमन्ते तत्र देवता, बदला, मुसलमान मुसलमान भाई-भाई और नारंगिया आदि उनकी ऐसी ही प्रमुख कहानियाँ हैं। अज्ञेय ने चौथे खेप की कहानियाँ कही हैं। इन कहानियों के संबंध में अज्ञेय कहते हैं-

> *कहा जाता है कि विपत्ति के समय हिन्दू, हिन्दू की मुसलमान, मुसलमान की मदद करता है, लेकिन इस कहानी में कुछ मुस्लिम औरतें ही अपनी बहनों के साथ अमानवीय व्यवहार करती हैं। यहां तक की उनके चरित्र पर लांछन लगाने से भी नहीं चूकती हैं।*

ये कहानियां भारत-विभाजन के विभ्राट और उससे जुड़ी मनःस्थितियों तथा आहत संवेदन और मानव मूल्यों के आग्रह की कहानियाँ हैं।[2]

शरणदाता में एक आदर्शमयता तो है ही, साथ ही इस कहानी में विभाजन के परिवेश में सूक्ष्म मानव संवेदनाओं की व्यंजना भी हुई है। प्रेम जैसे इन्सानी मूल्य किस प्रकार पतनोन्मुख होकर घिनौने हो जाते हैं, इसकी मार्मिक अभिव्यक्ति इस कहानी में हुई है।

यह कहानी विभाजन के दिनों में, हिन्दू-मुसलमान में उत्पन्न एक-दूसरे के खून की प्यास से सम्बद्ध है। औरों को घर-बार छोड़, भारत के लिए जाते हुए देखकर देविन्दरलाल भी लाहौर छोड़कर जाना चाहते हैं। उनका वकील मित्र रफीकउद्दीन उन्हें भारत जाने से रोकता है। वे देविन्दरलाल की हिफाजत की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं लेकिन जब दंगा उग्र रूप धारण कर लेता है तो उनकी आँखों में भी पराजय का भाव आ जाता है। मुसलमानों की धमकी के कारण शरणदाता रफीकउद्दीन, उसके रहने का प्रबंध शेख अताउल्लाह के यहां एक गैराज में कर देते हैं। वहां, वह एक बंदी की-सी जिन्दगी बिताता है, उसका वहां एक ही साथी है, बिलार। उस परिवार में एक जेबुन्निसा ही थी जिसमें इन्सानियत का जज्बा था। एक बार जब भोजन आता है तो उसमें एक पर्ची भी होती है, जिस पर लिखा था- खाना कुत्ते को खिलाकर खाइयेगा।[3]

देविन्दरलाल का दिमाग घूम जाता है। शरणागतों के साथ ऐसा विश्वासघात। खाने में सचमुच जहर था। जैबू ने ही इसकी चेतावनी दी थी। देविन्दरलाल वहां से भागने में सफल हो जाता है। अपने घर का हाल-चाल जानने वह दिल्ली रेडियो पर अपील करता है। तब एक दिन उसे लाहौर की मुहर वाली चिट्ठी मिलती है- 'आप बचकर चले गये, इसके लिए खुदा का लाख-लाख शुक्र है। मैं मानती हूं कि रेडियो पर जिनके नाम आपने अपील की है, वे सब सलामती से आपके पास पहुंच जायें। अब्बा ने जो किया या करना चाहा, उसके लिए मैं माफी मांगती हूं... उसकी काट मैंने कर दी थी। एहसान नहीं जताती... सिर्फ यह इल्तजा करती हूं। आपके मुल्क में अकलीयत का कोई मजलूम हो तो याद कर लीजिएगा। इसलिए नहीं कि वह मुसलमान है, इसलिए कि आप इन्सान हैं।'[४]

इस प्रकार 'शरणदाता' कहानी में जहां एक ओर रफी और शेख के रूप में शरणदाता का परिवर्तित मनोभाव चित्रित हुआ है वहीं दूसरी ओर जैबू का मानवीय एवं उदार रूप भी चित्रित हुआ है। इस तरह एक ओर विश्वास भंग है तो दूसरी ओर मानवीय आस्था का आदर्श भी है। इस तरह यह एक साम्प्रदायिकता विरोधी कहानी भी बन जाती है और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की कहानी भी बन जाती है।

विभाजन की त्रासदी पर लिखी एक कहानी है- 'मुसलमान मुसलमान भाई-भाई' इसमें हिन्दू-मुस्लिम समस्या को नहीं उठाया गया है बल्कि कहानीकार ने भारत-विभाजन की समस्या पर एक नये ढंग से विचार किया है। इसमें मुसलमान को ही मुसलमान पर अत्याचार करते हुए दिखाया है। कहा जाता है कि विपत्ति के समय, हिन्दू हिन्दू की, मुसलमान मुसलमान की मदद करता है, लेकिन इस कहानी में कुछ मुस्लिम औरतें ही अपनी बहनों के साथ अमानवीय व्यवहार करती हैं। यहां तक की उनके चरित्र पर लांछन लगाने से भी नहीं चूकती हैं- इस सन्दर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- 'बड़ी पाकिस्तानी बनती हो। अरे, हिन्दुओं के बीच में रही और अब उनके बीच भागकर जा रही हो, आखिर कैसे? उन्होंने क्या यों ही छोड़ दिया होगा? सौ-सौ हिन्दुओं से ऐसी तैसी कराके पल्ला झाड़ के चली आई, पाकदामनी का दाम भरने।'[५]

जमीला में इसकी तीखी प्रतिक्रिया होती है- 'थू' शब्द ही उन तीनों औरतों की हिकारत एवं घृणा को दर्शाता है। यही बात 'रमन्ते तत्र देवता' कहानी में भी मिलती है। इस कहानी में बिशनसिंह दंगे में फंसी एक स्त्री की रक्षा करते हैं, उसे पनाह देते हैं। जब दंगा कुछ कम होता है तो वह उस स्त्री को घर पहुंचाने जाते हैं तब वहां पति देवता के मुख क्रोध का भाव देखते हैं। इस पर बिशनसिंह दुःख के साथ कहता है- '"उन्होंने मुझे जवाब नहीं दिया। वहीं से स्त्री की ओर उन्मुख होकर बंगाली में पूछा, 'तुम रात को क्या जाने कहां रही हो, सबेरे तुम्हें यहां आते शरम न आई? क्या आज समाज में नारी की यही स्थिति है? क्या ऐसे माहौल में सीता को बार-बार अग्नि परीक्षा देनी होगी।'[६]

शरणार्थी जीवन पर आधारित 'नारंगिया' कहानी भी महत्वपूर्ण कही जा सकती है। इसमें दो शरणार्थी भाइयों की कहानी कही गई है। जब 'हरसू' नारंगियों की दुकान सजाकर नारंगिया बेचता है तब शरणार्थी हृदय की सही पहचान होती है। वे हैं तो शरणार्थी लेकिन उनका हृदय परोपकार एवं सहानुभूति से लबालब भरा हुआ है। बच्चों को नारंगियों की तरफ हसरत भरी निगाहों से देखते हुए परसू, हरसू से कहता है-

'अबे, दे दे न नारंगी- उन्हें ऐसे देखते देख तुझे तरस नहीं आता- शरम नहीं आती? तू इन्सान का बेटा है...।'[७]

इतना ही नहीं परसू अपने पास से अठन्नी निकालकर हरसू को देता है और बच्चों को नारंगिया देने के लिए कहता है। हरसू के दो आने वापस करने पर परसू कहता है- मेरे दो आने। हुंह! मेरे दो आने। मेरे बाप के हैं। जा ये भी उस छोकरे को दे दे जो अपने पैसे से नारंगी खरीदता है, कह दे उसे, जाकर यह भी अपने बाप को दे दे।'[८]

बदला कहानी, बदला लेने की दृष्टि से नहीं लिखी गई है। इसमें बदला एक नये ढंग का बदला है। इसमें ट्रेन में बैठे एक सिख की कहानी कही गई है जो लाहौर से भारत आया है- उसकी विडम्बना है कि उसको अपने देश में शरणार्थी कहा जाता है। 'सिख' को यह पता है कि उसके और उसके परिवार के साथ किस प्रकार के अत्याचार हुए हैं लेकिन भारत में वह ट्रेन को ही अपना घर समझता है। वह दंगे में फंसे मजलूम लोगों की सहायता करता है। ट्रेन में बैठी सुरैया की वह मदद करता है। उसका कहना है- 'शेखपुरे में हमारे साथ जो हुआ सो हुआ- मगर मैं जानता हूं कि उसका मैं बदला कभी नहीं ले सकता, क्योंकि उसका बदला हो ही नहीं सकता। मैं बदला ले सकता हूं- और वह यही कि मेरे साथ जो हुआ है, वह और किसी के साथ न हो। इसीलिए दिल्ली और अलीगढ़ के बीच इधर और उधर लोगों पहुंचाता हूं।'

इन कहानियों में अज्ञेय साम्प्रदायिक समस्या का हल ढूंढ़ते हुए दिखाई देते हैं। इसीलिए उन्होंने बिशनसिंह, सिख और परसू तथा पात्रों की सर्जना की है।

यदि समाज के सभी लोग इन पात्रों की तरह सोचे-विचारे तो दंगे क्यों होंगे? मानवता क्यों पीड़ित होगी?

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी कहानी के क्षेत्र में अज्ञेय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 'हारीति', रोज, (गैंग्रीन), जीवन-शक्ति, पुलिस की सीटी, हीली बोनू की बत्तखें, लेटर बॉक्स, शरणदाता, रमन्ते तत्र देवता, बदला और नारंगिया आदि कहानियां आज भी उतनी ही पठनीय हैं जितनी अपने समय में थीं।

सन्दर्भ सूची-

१. समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि
डॉ. धनंजय (सम्पादक) : पृ. ४
२. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : पृ. २१
३. वही : पृ. ४८७
४. वही : पृ. ४८७
५. वही : पृ. ४९३
६. वही : पृ. ४९७
७. वही : पृ. ५७८
८. वही : पृ. ५७८

●

पता- रीडर, हिन्दी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा